## 1936B My Dear Daughter Hemlata

(She was 8 then)



भूपेन्द्र भवन, विनोद मिल्स उज्जैन
माघ सुदी ६ वी. सं. २४६२ विक्रम १९९२
ता० २९।१।३६
समय रात को १० बजे बाद
प्रारम्भ

प्यारी बेटी हेमलता बाई,

यदि तू जीवन में शान्ति और सुख चाहती है, तो प्रतिज्ञा कर ले कि अपनी जबान को अपने काबू में रक्खूंगी। देख, तेरी माँ को मैं कितना अधिक चाहता हूं, हृदय से प्यार करता हूं, पर तेरी माँ की जबान काबू में नहीं है, बात बात पर उल्टे ताने मारती है, जरा जरा सी बात पर लड़ने को तैयार रहती है, न सुबह देखती है न शाम। न घर देखे न बाहर, न दिन देखे न रात। न आदमी देखे न औरत, न इज्जत देखे न अपमान, न काम का वक्त देखे, न सोने का, खाने का पीने का आदि कोई भी ख्याल कर - बिना ही आगा पीछा सोचे जैसी चाहे जहां तहां जबान बोल उठती है। उसे न तो यह लाज रहती है कि लोग इस बात को सुनेंगे, तो क्या कहेंगे, न यह ही सोचती है कि इसका मुझ पर क्या असर होगा. और उसके बदले स्वरूप मैं उसके साथ क्या और कैसा भला बुरा व्यवहार करूंगा। फल एक दो बार नहीं, हजारों बार यह हुआ, कि उन्होंने खोटी उल्टी सीधी जबान चलाई और मैंने उल्टे सीधे हाथ। क्योंकि कहावत ही है कि किसी का हाथ चलता है, किसी का मुंह।

प्यारी बेटी, जब तक विवाह प्रथा रीति-रिवाज एकदम बदल नहीं जाते, स्त्री-पुरुष का वर्तमान जैसा सम्बन्ध एकदम शिथिल नहीं हो जाता, तब तक स्त्रियों को लाजिमी है, कि वे अपनी २ जबानों को एकदम काबू में रखें। इन्हीं स्त्रियों की इस कटु वाणी के फल स्वरूप ही आज तक अगणित राजघराने नष्ट हो गए, कुटुम्ब के कुटुम्ब सदा के लिए लुप्त हो गए। और इस विवाह प्रणाली के बदलने ही की कौन सी बात है, किसी भी समय और किसी भी देश में स्त्रियों को हंसमुखी बनकर रहना ही पड़ेगा। स्त्री ही क्यों मनुष्यों तक के लिए भी यही बात है। फर्क इतना ही है कि मनुष्य तो विवाहित या अविवाहित किसी भी तरह रहकर के अपने जीवन को बिता सकता है क्योंकि वह स्वयं अपने लिए कमाने वाला है, इसलिए यदि वह अकेला भी रह जायेगा, तो भी संसार में उसका निर्वाह हो जायगा। पर स्त्रियों के लिए यह बात नहीं है। कम से कम भारतवर्ष में तो जीवनभर स्वयं जीविकोपार्जन जीवन निर्वाह करना स्त्रियों के लिए आज तो असंभव ही जंच रहा है।

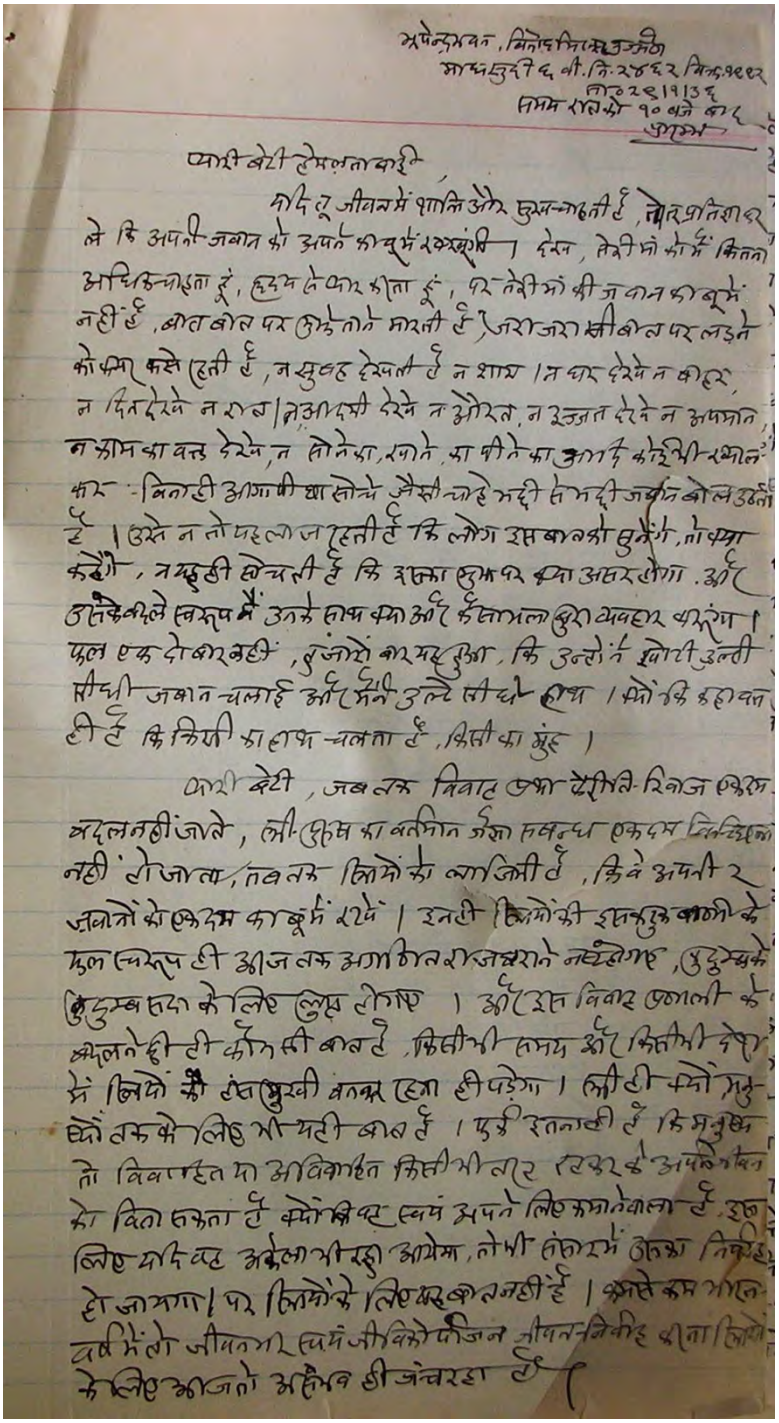

ऐसी हालत में तेरी विवाह के जीवन तक चाहे मैं जीवित रहूं, या चाहे महाप्रयाण कर चुका होऊँ, पर तुझे आज इतने दिन पहिले यह संदेश दे लिखकर रख रहा हूं, कि तुझे अभी से अपनी जबान पर पूरा काबू रखना चाहिए चाहे कोई भी हो, सबसे प्रेम का व्यवहार और बातचीत करना चाहिए। खासकर जिस घर में तू विवाहित होकर जाय, उसमें तो बहुत ही संभल २ कर चलने की आवश्यकता है। घर भर के छोटे से लेकर बड़े बूढ़े तक की तुझे सेवा सुश्रूषा करनी चाहिए, सबके साथ अत्यन्त विनीत, प्रेमभरी बातचीत करना चाहिए। और खास कर, जिसके साथ तेरा गठबंधन हो, जिससे साथ जीवनभर के लिए एक होकर रहने की ~~गांठ~~ गांठ बंधी हो, उसके साथ तो अत्यन्त ही सरल, विनय और प्रेम से भरा हुआ उत्तम एवं निश्छल व्यवहार करना चाहिए।

याद रख बेटी, जिस गुड्डे गुड्डी का विवाह खेल बनाकर तू खेला करती है और गीत गाया करती है, वह इतना आसान या सुखद नहीं है जितना कि तुझे दिखाई देता है। यह विवाह और उसमें खासकर हमारे भारतवर्ष के अज्ञान और पशुता से भरे हुए विवाह तो अत्यन्त नरकों से भी बढ़कर हैं। उनमें कम से कम इतना धोखा तो नहीं होता - वे तो दूर से ही साफ २ अपना कुरूप और भयंकर डरावना स्वरूप तो दिखा देते हैं कि जिससे कोई भ्रम में न पड़े पर ये विवाह रूपी नरक तो ढोल बजा बजा कर, गीत गा-गा-कर के उस से भी भयंकर नरक - विवाह रूप महानरक में ढकेल देते हैं, कि जहां से फिर जीवन भर छुटकारा नहीं मिल सकता है। कि तुझे हाय हाय करके, सिसकियां भर-भर के, रात-रात भर चिल्ला-चिल्ला करके ~~तुझे~~ जीवन बिताना पड़ेगा। और यदि तू एक केवल अपनी जबान को वश में रखेगी, सोच समझ कर एक २ शब्द अपने मुख से निकालेगी, तो आशा की जा सकती है कि तेरा भविष्य, तेरा विवाहित जीवन सुखशान्तिमय हो सकेगा।

आज ही देख, मेरे एक कर्म में लेकर चुपचाप शान्त रहने में लग जाने पर भी कितने २ कटु शब्दों से तुझे उत्तेजित किया कि तेरा हाथ चल पड़ा और अब वह पूरे २ घण्टे से हाय तोबा मचा रही है। वह तो अपना दुःख रोकर चिल्लाकर शायद हल्का कर रही है, पर मैं अपने हृदय की क्या कहूं। कितने दुःखी होकर

के साथ मैंने कमरे में पैर रखा था, और आज ही क्या, जब २ भी मैं बाहर से हंसता हुआ आता हूं, सब ये तुम्हारी मां उसी तरह से- हंसते हंसते सामने आने की जगह भरी हुई, रिसानी या खिसियानी सी सामने आती हैं, खैर मैं इतने से भी संतोष कर लूं, कि चलो इतने से ही झगड़ा निपटा। पर चुपचाप अपने काम में लग जाने पर भी वह बुरे २ शब्दों से लड़ाई करते, उन्हें उत्तेजित करने के लिए कमर कसकर बैठ जाती हैं। अनेकों बार मैं मौका टालकर चुप जाता हूं, अनेकों बार उन्हें हंसी में बदल देता हूं। पर कभी२ तो उन्हें ऐसा भूत सवार होता है कि वह बिना मेरे हाथ चलाए उतरता ही नहीं है। उनका भूत तो उतर जाता है, पर मेरा आत्मा अनन्त दुःख में उतराने डूबने लगता है। मैं ही जानता हूं, कि इनके इस चीख-चिल्लाने के समय, मैं किस वेदना का आत्म-ग्लानि का अनुभव कर रहा हूं।

प्यारी बेटी, मन में आता है, कि तुम्हारी मां को सदा के लिए उनके मां बाप के यहां ही छोड़ दूं, पर तुम्हारी और बबुआ की हालत देखकर यह भी नहीं कर सकता हूं। क्योंकि जब तुम या बाबू को कभी कोई भी उनके आगे आया, तभी से मैं देखता हूं, कि वे उस समय से लेकर आजतक तुम्हारे साथ कैसा वर्ताव करती आती हैं। शायद एक सौत भी अपने सौत के बच्चों के साथ ऐसा वर्ताव नहीं करती होगी। उन्हें बात बे बात कितने बुरे शब्द - हरामी, हरामी, जम का दूत, मां को खा जाता, चूल्हे में लो जाय - ऐसा बेटी-बेटा, ऐसा से तो बांझ ही भली आदि २। सच कहता हूं बेटी उन्हें वे कई दिन और वह एक समय खूब अच्छी तरह याद है जब तुम लोगों के साथ तुम्हारी इस मां ने कैसे २ अनुचित नृशंस काम और व्यवहार किए हैं।

(७) एक दिन की बात है जब हम गेस्टहाउस बिन्दावन में रहते थे, तुम्हारी मां बंगाले पर जाने लगीं, बबुआ साथ हो-लिया, बस इतने पर तुम्हारी मां ने हरामी उसको मार मारे, मारे साथ में वह, आदि शब्दों से उसका सत्कार किया; २-३ इतनी बड़ी बड़ी ईंटें उठाकर उसपर फेंकीं कि यदि वह भागा होता, या ठीक मौके पर मैं न आया होता, तो

कम से कम उनके हाथ पैर छूने का फिर कुछ में कोई कसर न रह जाती।

(२) विचारा वह तुम्हारा प्यारा नेमी-भैया, जिसके साथ तुम २४ घण्टे ही खेला करती थीं, जिसके पलभर को भी तुम्हारी आँखों से ओझल हो जाने पर तुम 'म्हारा नेमी, म्हारा नेमी' चिल्लाया करती थीं और जिसके आज घर से महाप्रस्थान किए हो जाने पर भी तुम 'म्हारा नेमी कब आवेगा' २ चिल्लाया करती हो. वही तुम्हारा प्यारा नेमी एक बार तुम्हारी माँ के साथ मंदिर जाने का हठ पकड़ने लगा, तो केवल इतनी सी बात पर कि तीन कदम मंदिर तक — कौन इसे लादकर ले जाय, बेचारे को कमरे में बंद कर मंदिर चली गई। और उस दिन यदि २-३ मिनट पीछे मैं न आ गया होता, तो बेचारे का दम घुट गया होता। वह कितनी सिसकियाँ लेकर अधखिलें भी भर रहा था, कि मेरे गोद में लेकर बहलाने पर भी पूरे २ घंटे तक उसकी साँस में साँस नहीं-नहीं आई। और क्या यही मातृ कहलाता है, क्या यही हृदय का सबसे बड़ा दान कहलाता और क्या इसी के लोग बड़े २ गीत गाया करते हैं कि मातृ-हृदय और मातृप्रेम का पता नहीं लग सकता। मैं तो ऐसे २ कोनों में देवकी यशोदा को एकदम बदनाम कलंकित सा समझने लगता हूं। और ऐसी तुम्हारी जैसी माताओं से एकदम विश्वास उठ गया है।

(३) और तुम्हारे लिए तो बेटी, जब चाहे कहीं २ कोसा करती है, कि या रांड खाकर रहेगी, जहाँ जायगी, छोड़ा रहेगी, सिर फुड़ायेगी। मर जाय, चूल्हे में जा, और कैसे कैसे शब्द निकलती है कि सुनकर तबियत जलकर खाक हो जाती है। बेटी बताओ, किस भरोसे पर मैं तुम दोनों को उनके भरोसे पर छोड़कर चुप बैठ जाऊं।

इतने दिन हो जाने पर भी मैंने आज तक भी नहीं देखा कि तुम्हें पढ़ाने की फिकर भी करती हो। रात रात भर मैं उड़ाया करता हूं और वह मजे से खुर्राटे मार कर सोया करती है। पर उन्हें पढ़ाने लिखाने आदि की क्या फिकर। तुम लोग अभी समझने में बच्चे पैदा नहीं हुए हो, उनको जो जाने के लिए ही पैदा हुए हो।

प्यारी बेटी, तुमलोगों के पीछे कितनी लड़ाइयां हुईं, कितना कितना हाय तौबा मचा, पर तुम्हारे हित की बात अभी तक भी उनके हृदय नहीं जमी। इसे स्वीकार करने पर [illegible] आंखों का जल डाल दिया तो डाल दिया बस फिर मशीन हो गए। फल क्या हुआ, कि आज इसे नौ वर्ष से [illegible] ते [illegible] भी तुम्हारी ही मां [illegible] के बाद बेचारे की आंखों का क्या हाल होगया। उनके पेट के [illegible] कितने दिनों से चिल्ला रहे हैं पर, फिर भी उनके [illegible] में ही नहीं आता है कि मैं क्या कर्तव्य पालन करूं।

ओह! उस दिन का दृश्य जब बेचारा [illegible] ला दाह से छुटकारा पा रहा था, और एक-एक मिनट में 'मां आनी' मां पानी दे; तो बेचारा वह तो गले में कुंजी लेने से [illegible] एक घूंट पी पाते और तुम्हारी मां के मुंह से क्या निकले रोज़ा तो मिटे - मां मां चिल्लाते हैं। एक मिनट कोई [illegible] नहीं लेने देता, उनके पेट को भी इसे से उठने नहीं देते ओह कितना स्वेद हो जाने पर "कि इसके मुंह में पानी डालते डालते ही जाना, नहीं तो दम छूट जायगा" इतना मालूम जाने पर भी तुम्हारी मां ने वही कुसंस्कार वश [illegible] मूंह ही 'मां आनी' 'मां आनी' चिल्लाता है पर [illegible] नहीं, पानी देने में गफलत कर दी, और इसे 10 मिनट भी तो नहीं [illegible] होंगे कि मैं दवाई दरवाजे से दूध लेके आया कि उसे अन्तिम घड़ी गिनते हुए पाया। [illegible] दौड़ धूप भी पर वहां तो 2 मिनट बाद बेचारे के प्राण पखेरू ही उड़ गए।

बताओ बेटी, क्या एक मात्र हृदय भी कभी ऐसी [illegible] की सकती है, जैसी कि तुम्हारी मां करती आती है। कि तुम्हीं बताओ, कि कैसे तुम लोगों को उनके भरोसे पर उनके साथ छोड़ दूं। आज तक जब कभी तुमलोगों को ~~[illegible]~~ धार्मिकता के लिए उनके भरोसे पर छोड़ा तभी तुमलोगों की मरणासन्न दशा हुई।

प्यारी बेटी क्या बताऊं, कुछ समझ में नहीं आ[illegible] क्या करूं और क्या नहीं करूं। इतना ही लिखकर इति [illegible] कि 'घर वैद्य पत्नी न पुत्र विनीता [illegible]' [illegible]

[illegible] १२ [illegible] [illegible]